शिखा का महत्व क्यों ?

'शिखा को हिंदू धर्म का एक उपलक्षण माना गया है। प्रकृति और विज्ञान के नियमों को ध्यान में रखकर 'शिखा शास्त्र' तैयार किया गया है। मनु ने शिखा संस्कार यानि चूड़ा कर्म करने के लिए सबको कहा है। यथा– **चूड़ाकर्म द्विजातीनां सर्वेषामेव धर्मतः**

शिखा कितनी बड़ी हो, इस संबंध में शास्त्र का वचन है कि उसका आकार गोखुर के बराबर होना चाहिऐ।

'यर्जुवेद' में शिखा को इंद्रयोनि कहा गया है। कर्म, ज्ञान और इच्छा प्रवर्तक उर्जा ब्रह्मरंध्र के माध्यम से ही इंद्रियों को प्राप्त होती है। दूसरे शब्दों में, शिखा मनुष्य का 'एंटिना' है। जिस प्रकार दूरदर्शन या आकाशवाणी की प्रक्षेपित तरंगो को पकड़ने के लिए ऐंटिना का उपयोग किया जाता है, उसी प्रकार ब्रह्माण्डीय उर्जा प्राप्त करने के लिए शिखा का प्रयोग होता है। अन्य मर्म स्थानों की अपेक्षा ब्रह्मरंध अति महत्वपूर्ण एवं बहुत कोमल है। इसी कारण शिखा की योजना इस स्थान पर हुई है। इसे अंग्रजी भाषा में 'पिनियल ग्लैंड' कहा जाता है। इस ग्रंथि का सही स्थान ब्रह्मरंध्र के पास है। यह ग्रंथि जितनी अधिकाधिक संवेदनशील होती है, मानव का विकास उतना ही अधिक होता है।

मंत्र पुरश्चरण या अन्य धार्मिक अनुष्ठान करते समय शिखा को गांठ मारनी चाहिए। इसका कारण यह है कि गांठ मारने से मंत्र स्पंदनों द्वारा उत्पन्न होने वाली उर्जा शरीर में एकत्रित होती है। शिखा के माध्यम से उसका बहिर्गमन होना प्रशस्त नही है। अतिरिक्त उर्जा होने पर संक्रामक आसन से वह अपने आप निकल जाती है। संध्या करते समय शिखा बंधन स्वतंत्र विधि है। शिखा ग्रंथि में चामुण्डा देवी का अधिुष्ठान माना गया है। चामुण्डा देवी विचार प्रदूषण और ध्वनि प्रदूषण रोकती हैं, अतः **तिष्ठ देवी शिखा बन्धे** प्रार्थना उनके लिए की जाती है।

'आयुर्वेद' में मांस मर्म, शिरा मर्म, स्नायु मर्म, अस्थि मर्म, एवं संधि मर्म आदि कुल एक सौ सात मर्म हैं। उनमें से अति महत्वपूर्ण उन्नीस मर्म–अधिप है। अधिपों की रक्षा के लिए यहां अधिक केश रहता है। ब्रह्मरंध्र मर्म सम्राट है। इस कारण वहां अधिक केश पाये जाते हैं। इस तरह शिखा रखना आरोग्य एवं आध्यात्मिक प्रगति के लिए हितकारी सिद्ध होता है।

★★★